नारायण लाल परमार

घर कहां है?

घर कहां है अब हमारा
सिर्फ जंगल रह गया है

घास फूस की छत है केवल
बरामदे में बिछी चटाई
अलमुनियम की एक डेगची
बरसों पहले घर में आई

सो रही अधपेट प्रतिदिन
यही मंगल रह गया है

खालीपन है सारे घर में
पड़ा हुआ है चूल्हा ठंडा
भेदभरा व्यापार न कोई
और न कोई वाद वितण्डा

अधियारे से जूझे ढिबरी
एक दंगल रह गया है

रात रात भर कीट पतंगे
केवल गुर्राते रहते हैं
ऊपर ऊपर रोज हमारे
बस, षड़यंत्र यहां बहते हैं

सिर्फ सूखी आंख का
सूना कमंडल रह गया है।

फूलदान भी धूल सना है

एक कलेण्डर टंगा पुराना
है घर की दीवाल पर

सूख रहे फूलों के पौधे
टूटी है खपरैल भी
बुझने बुझने को है ढिबरी
खत्म हो रहा तेल भी

घड़ी टिकटिका रही अहर्निश
जैसे चिड़िया डाल पर

टंगे अलगनी पर हैं कपड़े
मैले धूसर आज भी
सूने घर में चूहे दौड़े
आती उन्हें न लाज भी

फूलदान भी धूल सना है
रोता अपने हाल पर

जीवन और मरण में उलझा
आज तलक इतिहास है
कहने–सुनने को यह सब कुछ
और नहीं कुछ खास है

एक अदद है रहा आदमी
जीता अपने हाल पर।

('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)

सम्पर्क–
पीटर कालोनी
टिकरापारा
धमतरी–493773